ESTD : 1954

दिल्ली प्रिंटर्स एसोसिएशन

मासिक

समाचार पत्रिका

संपादक : एच. एल. खन्ना केवल सदस्यों के लिए निःशुल्क वितरण हेतु अंकः नवम्बर 2018, मुद्रणः 30 नवम्बर 2018

प्रिंटवीक इंडिया अवार्ड्स समारोह सम्पन्न

29 नवम्बर को मुम्बई में सेंट रेजिस में प्रिंटवीक इंडिया अवार्ड का दसवां संस्करण समारोह आयोजित हुआ। इस समारोह में प्रिंटिंग उद्योग की जानी–मानी हस्तियां मौजूद रहीं। इस अवार्ड के लिए 105 कंपनियों की 240 प्रवृष्ठियां शामिल की गईं। समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में गल्फ आइल के प्रबंध निदेशक श्री रवि चावला पधारे। प्रस्तुत हैं समारोह की कुछ झलकियां।

रेप्लिका प्रेस दिल्ली के श्री भुवनेश सेठ एवार्ड ग्रहण करते हुए।

अर्चना एडवरटाईजिंग दिल्ली के श्री राजेश गुप्ता एवार्ड ग्रहण करते हुए।

धोते ऑफसेट टैक्नोक्रैफ्ट, मुम्बई के श्री तुषार धोते एवं श्री उदय धोते एवार्ड ग्रहण करते हुए।

विजयश्री पैकेजिंग इन्दौर के श्री आयुष जैन (सुपुत्र श्री राजेन्द्र जैन) एवार्ड ग्रहण करते हुए।

SIDDHI VINAYAK PAPER TRADERS
Complete Paper & Board Solution Under One Roof
Deals in:
All Kinds of Indian & Imported Paper & Board
C-151, Okhla Industrial Area, Phase-I, New Delhi - 110020
Phone: 26815132, 26815025 • Mobile: 9811010712 • Email: info1siddhivinayak@gmail.com

ESTD : 1954

President
Mr. Rajesh Sardana
98100-31996

Imm. Past President
Mr. Rajiv Gupta
98117-01764

Vice-presidents
Mr. Ajay Sharma
8178429924

Mr. Meghraj Bhati
98103-52633

Mr. Prakash Dass
98187-24948

Hon. General Secretary
Mr. Mahinder Budhiraja
93122-41788

Joint-secretaries
Mr. Atul Goel
98100-03943

Mr. Puneet Talwar
98110-81291

Treasurer
Mr. Kewal Krishan Singhal
98111-15945

Executive Members
Mr. Ashok Aggarwal
Mr. Ashok Kumar Nandra
Mr. D. K. Vohra
Mr. Deepak Bhatia
Mr. M. N. Pandey
Mr. Mohd Mustaqeem
Mr. P. K. Chauhan
Mr. P. N. Kapur
Mr. Prashant Aggarwal
Mr. Prabir Kumar Mukherjee
Mr. Raghu Nandan Sharma
Mr. Sandeep Aggarwal
Mr. Sanjay Sharma
Mr. Shiv Mittal
Mr. Simranjot Singh Bhatia
Mr. Sunil Jain
Mr. Vijay Goel
Mr. Vijay Jain
Mr. Vikas Gaur
Mr. Vivek Jain

Executive Secretary
H.L. Khanna
9958043222

Delhi Printers' Association
Flat No. 26A,
Shanker Market,
New Delhi-110001
Tel. : 011-23414415
Telefax : 011-23412574
Email : delhiprinter@hotmail.com

इतिहास

जानिए कागज एवं छपाई का आविष्कार कैसे हुआ

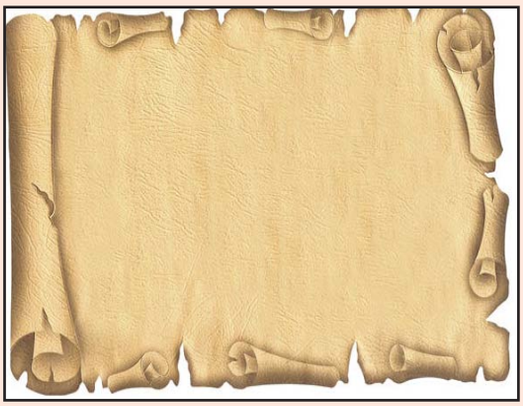

कागज के लिए प्रयोग किया जाने वाला पेपर शब्द पेपाइरस नामक शब्द से बना है। पेपाइरस प्राचीन मिस्र में लिखने के लिए प्रयोग किया जाने वाला एक प्रकार का सरकंडा होता था। मिस्रवासी पेपाइरस की छाल को एक–दूसरे पर रखकर कठोरता से दबा देते थे। इस प्रकार कागज की परतें तैयार हो जाती थीं।

कागज बनाने की कला सर्वप्रथम किस देश में प्रयोग में आई।

कागज बनाने की कला चीन में सर्वप्रथम प्रयोग में आई। चीनवासी फटे पुराने वस्त्रों को पानी में अधिक समय तक भिगोकर रखते थे। फिर उसको कूटकर लुगदी बनाकर कागज तैयार करते थे। इसके पहले प्राचीनकाल में लोग लिखने के लिए ताड़ और खजूर के पत्तों का प्रयोग करते थे।

छपाई कला का आविष्कार कहां हुआ?

कागज की तरह छपाई कला का आविष्कार भी चीनवासियों ने किया। वे लकड़ी के टुकड़ों, अक्षरों, शब्दों तथा डिजाइनों की खुदाई करते थे। इन्हें स्याही में डुबाकर कागज के टुकड़ों पर छपाई करते थे। आगे चलकर इसी विधि का प्रयोग करके पुस्तकें छापी जाने लगीं। 1430 तक यूरोप में पुस्तकों की छपाई आंरभ हो चुकी थी।

अक्षरों के ठप्पे सर्वप्रथम किसने बनाए?

हालैण्ड (नीदरलैंड) के लॉरेंट कॉस्टर ने लकड़ी का प्रयोग करके वर्णों के ठप्पे (ब्लॉक) तैयार किए। इन्हें कई प्रकार से व्यवस्थित तथा बार–बार प्रयोग करके अनेक पृष्ठों की छपाई की जा सकती थी।

छपाई तकनीक का आविष्कारक किसे माना जाता है?

जर्मनी के जॉन गुटेनबर्ग को आधुनिक छपाई तकनीक का आविष्कारक माना जाता है। उन्होंने प्रथम छापेखाने की स्थापना की थी। गुटेनबर्ग ने छपाई के लिए धातु के माध्यम से विभिन्न प्रकार के अक्षर बनाए। अक्षर बनाने के लिए उन्होंने सीसा(लेड) धातु का प्रयोग किया।

तब छपाई किस प्रकार होती थी?

तब प्रत्येक पंक्ति को बनाने के लिए शब्दों का प्रयोग किया जाता था। एक पृष्ठ बनाने के लिए कई पंक्तियां तैयार की जाती थीं। फिर छपाई के लिए उस पृष्ठ संरचना पर स्याही लगाई जाती थी। उसे दबाव डालकर छपाई की जाती थी।

इस विधि से छपने वाली पहली पुस्तक क्या थी?

सन 1453 के आसपास इस विधि से छपने वाली पहली पुस्तक बाइबिल थी, जिसे भेड़ की खाल पर छापा गया था।

वर्ष 2018–2019 के वार्षिक शुल्क के लिए सदस्यों से अनुरोध

जिन सदस्यों ने अपना वर्ष 2018–2019 का वार्षिक शुल्क अभी तक नहीं भेजा है उन्हें याद दिलाया जा रहा है कि अपना शुल्क स्वयं / कोरियर / डाक द्वारा शीघ्रअतिशीघ्र भेजने की कृपा करें। कुछ सदस्य ऐसे भी हैं जिनका वार्षिक शुल्क 2017–2018 का भी नहीं आया है, उन्हें फिर याद दिलाया जाता है कि लगातार दो वर्ष तक वार्षिक शुल्क न आने पर एसोसिएशन की सदस्यता स्वयं समाप्त हो जाती है।

यदि आप वार्षिक चंदा बैंक में सीधे जमा करना चाहते हैं तो संस्था के निम्नलिखित दो बैंक खातों में से किसी में भी जमा करवा सकते हैं तथा जमा करने के बाद संस्था को सूचित कर दें। बैंक का विवरण इस प्रकार है।

Delhi Printers' Association
Saving A/c No. 90042010031370
IFSC Code-SYNB0009004
Bank Name - Syndicate Bank

Delhi Printers' Association
OD A/C No. 0022414008455
IFSC Code-HDFC0CTJCBL
Bank Name-The Janata
Co-Operative Bank Ltd.

Printing, Processing and Binding Sponsored by

NIYOGI OFFSET

Beyond printing. We create impressions

D-78, Okhla Industrial Area, Phase-I, New Delhi-110020. (India)
Ph: 011 49327000, Fax: 011 26813830, 26810483
e-mail:niyogioffset@gmail.com,
www.niyogibooksindia.com

अध्यक्ष की कलम से

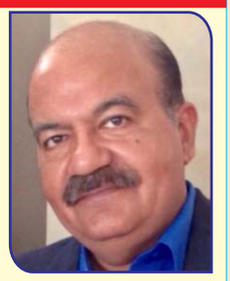

हम सभी जानते हैं कि हमारे प्रिंटिंग उद्योग में डिजिटल पद्धति आने से हुई क्रांति के कारण छपाई में नित नई तकनीक का तेजी से आगमन हो रहा है तथा छपाई में गुणवत्ता एवं उत्तमता नई ऊँचाइयों को छू रही है। इस कारण हमारे ग्राहक भी उत्तम से उत्तम छपाई की आशा तथा माँग करते हैं। अतः बाज़ार में बने रहने के लिए सभी मुद्रक भाईयों का प्रयास रहता है कि इस माँग को पूरा करने के लिए अपने संस्थान में उचित बदलाव समय-समय पर करते रहें। इस उद्देश्य के अनुसार न केवल नवीनतम् तकनीक की मशीनों को लगाने का प्रयत्न करना चाहिए अपितु उन्हें सफलतापूर्वक प्रयोग में लाने के लिए अपने कर्मचारियों को भी प्रशिक्षित करते रहना होता है।

छपाई के क्षेत्र में ट्रेनिंग लेने के लिए छात्र छपाई के इंस्टीट्यूटों में दाखिला लेते हैं। दिल्ली में केवल दो ऐसे इंस्टीट्यूट हैं – एक दिल्ली सरकार द्वारा चलाया जाने वाला पूसा पॉलिटेक्निक है तथा एक प्राइवेट क्षेत्र में डौन बोस्को इंस्टीट्यूट है – जहाँ प्रशिक्षित होने के बाद छात्र नौकरी के लिए मुद्रण संस्थानों में आवेदन करते हैं। ऐसे छात्र वास्तविक निपुणता मशीनों पर प्रैक्टिकल कार्य करने के बाद ही पाते हैं। अतः शिक्षण संस्थानों को चाहिए कि छात्रों को पूर्णरूप से नौकरी पाने से पहले मुद्रण क्षेत्र में आई नवीनतम तकनीकों से परिचित कराये तथा नवीनतम मशीनों पर प्रैक्टिकल अनुभव प्राप्त करने के अवसर प्रदान करायें अपितु छात्रों का ज्ञान अधूरा रह जाएगा। इस प्रकार की प्रैक्टिकल निपुणता देने के लिए या तो अपने संस्थान में नवीनतम मशीनें लगाएँ अथवा जिन प्रैसों में ऐसी मशीनें उपलब्ध हैं वहाँ छात्रों को ग्रुप में ले जाकर उन्हें इस प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त करने का अवसर दें। आज के डिजिटल तथा इंटरनैट युग में युवावर्ग बहुत तेज़ी से नई मशीनों को चलाने में निपुण होकर अपने कार्य के क्षेत्र में सफल हो रहे हैं।

प्रसन्नता की बात है कि केन्द्र सरकार ने विभिन्न उद्योगों में "स्किल इंडिया" प्रोग्राम के तहत् वोकेशनल ट्रेनिंग द्वारा 40 करोड़ लोगों को 2022 तक विभिन्न सांस्कृतिक एवं औद्योगिक कलाओं में प्रशिक्षण देने का उद्देश्य रखा है तथा इस क्षेत्र में सभी राज्य सरकारें भी तेज़ी से काम कर रही हैं। अतः मुद्रण कला के प्रशिक्षण के लिए विभिन्न शहरों में स्थित मुद्रण संस्थानों की एसोसियशनों को अपने-अपने राज्य सरकारों की सहायता से नये इंस्टीट्यूट स्थापित करके पूर्णतः प्रशिक्षित कर्मचारी तैयार करने चाहिये।

-राजेश सरदाना, अध्यक्ष

महासचिव की कलम से

स्क्रीन प्रिन्टिंग का आगमन फ्राँस तथा ग्रेट ब्रिटेन में सन् 1880 में टैक्सटाइल प्रिन्टिंग के लिए हुआ था किन्तु बाद में धीरे-धीरे इस पद्धति का उपयोग दूसरे औद्योगिक क्षेत्रों जैसे प्लास्टिक, ग्लास, मैटल आदि में भी होने लगा। पैकेजिंग के कार्य के लिए भी इस प्रकार की छपाई होने लगी थी। तत्पश्चात फ्लैक्सोग्राफी एवं ऑफसेट प्रिन्टिंग के आविश्कार होने से स्क्रीन प्रिन्टिंग ने अपनी पद्धति में इस विकास के अनुरूप बदलाव किए।

सन 1960 तक स्क्रीन प्रिन्टिंग का लगभग 90% प्रयोग ग्राफिक्स जैसे एडवर्टाइजिंग, आर्टिस्टिक, डैकोरेटिव वस्तुओं आदि के लिए होता था। साथ ही टी-शर्ट तथा दूसरे रेडीमेड कपड़ों पर पीस के हिसाब से भी स्क्रीन प्रिंन्टिंग होती थी जिसमें समय बहुत लगता था। फिर फैब्रिक पर स्क्रीन प्रिंन्टिंग द्वारा कपड़े के रोल पर रंगीन छपाई तेज़ गति से होने लगी। धीरे-धीरे कम प्रिंट आर्डर तथा छपाई के शुरूआती कम खर्च के होने से डिजिटल छपाई अधिक प्रचलित होने लगी किन्तु स्क्रीन छपाई पर इसका कोई विशेश प्रभाव नहीं पड़ा। एक अनुमान के अनुसार एशियन देशों में स्क्रीन छपाई का प्रयोग औद्योगिक इलैक्ट्रौनिक वस्तुओं के लिए अधिक हो रहा है तथा भविश्य में इस विधि में और अधिक विकास होने की आशा है। स्क्रीन प्रिन्टिंग के औद्योगिक उपयोग के क्षेत्र में बहुत सी कम्पनियाँ गोपनीयता रखती हैं ताकि उनके द्वारा की गयी छपाई की तकनीक दूसरी प्रतियोगी कम्पनी न कर पाये। गोपनीयता बर्तने के लिए वे स्क्रीन तथा डिजिटल अथवा किसी और प्रकार की छपाई की पद्धति प्रयोग में लाते हैं। इस गोपनीयता को और अधिक सुरक्षित रखने के लिए कुछ बड़ी कम्पनियाँ अपनी फ्रैक्टरियों में ही स्क्रीन प्रिन्टिंग की मशीन लगा लेते हैं ताकि उनकी छपाई की विधि की जानकारी किसी दूसरे प्रतियोगी को बिलकुल न मिल सके।

डिजिटल छपाई की पद्धति आने के बाद एक सवाल यह उठता रहा है कि क्या अब धीरे-धीरे स्क्रीन प्रिन्टिंग समाप्त हो जायेगी? किन्तु वास्तव में यह सोच गलत है क्योंकि जैसा ऊपर बताया गया है केवल टैक्सटाइल प्रिन्टिंग के लिए ही नहीं बल्कि अन्य विभिन्न औद्योगिक तथा एडवर्टाइज़िग क्षेत्र में भी यह पद्धति लगातार उपयोग में आ रही है। अतः स्क्रीन प्रिन्टिंग का भविश्य आज भी उज्जवल है।

-महिन्द्र बुद्धिराजा, महासचिव

Easeprint Solutions.com
Inspiring you for better Tomorrow

9818892321, 9818891112
info@easeprintsolutions.com
www.easeprintsolutions.com

OFFSET PRINTING ESTIMATION SOFTWARE
A Product developed by a PRINT PROFESSIONAL with Experience over THREE DECADES
●Estimation of Commercial & Packaging Printing ●Production ●Accounts ●Stock Inventory ●M.I.S.
A Complete ERP for Commercial & Packaging Printing

भारत में कहां छपते हैं नोट, कहां से आता है कागज और स्याही

चीन में भारत के नोट छपने की खबर आने के बाद नोट की छपाई चर्चा में आ गई है. विपक्ष ने इस खबर को लेकर सरकार से स्पष्टीकरण मांगा है, जबकि केंद्र सरकार ने साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट की इस रिपोर्ट को निराधार बताया है. सरकार का कहना है कि भारतीय रुपये सिर्फ भारत सरकार के प्रिंटिंग प्रेस में ही छापे जा रहे हैं. ऐसे में जानते हैं आखिर भारतीय नोटों की छपाई कहां होती है और इसकी स्याही–पेपर की व्यवस्था कहां से की जाती है...

. बता दें कि भारतीय करेंसी के नोट भारत सरकार और रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया द्वारा छापे जाते हैं और यह सिर्फ सरकारी प्रिंटिंग प्रेस में ही छापे जाते हैं. देशभर में चार प्रिंटिंग प्रेस हैं, जहां नोट छापे जाते हैं और सिक्के भी चार मिंट में बनाए जाते हैं.

ऐसा रहा नोट का इतिहास– ब्रिटिश सरकार ने साल 1862 में पहला नोट छापा था, जो कि यूके की एक कंपनी द्वारा छापे जाते थे. करीब 200 साल बाद 1920 में ब्रिटिश सरकार ने नोट को भारत में छापने का फैसला किया.

भारत में नोट छापने के उद्देश्य से साल 1926 में सरकार ने महाराष्ट्र के नासिक में एक प्रिंटिंग प्रेस शुरू की. जिसमें 100, 1000 और 10 हजार के नोट छापने का काम किया जा रहा था. हालांकि कुछ नोट इंग्लैंड से मंगाए जा रहे थे.

साल 1947 में भारत के आजाद होने तक नोट छापने का जरिया नासिक प्रेस ही थी. उसके बाद साल 1975 में भारत की दूसरी प्रेस मध्यप्रदेश के देवास में शुरू की गई. उसके बाद साल 1997 तक इन दो प्रेस से नोट छापे जा रहे थे.

साल 1997 में भारत में बढ़ती जनसंख्या को देखते हुए सरकार ने अमेरिका, कनाडा और यूरोप की कंपनियों से नोट मंगवाने शुरू किए. उसके बाद 1999 में मैसुर और 2000 में सलबोनी (पश्चिम बंगाल) में प्रेस शुरू की गई है.

अब भारत में चार नोट छापने की प्रेस है. इसमें देवास की बैंक नोट प्रेस और नासिक की करेंसी नोट प्रेस वित्त मंत्रालय के अधीन काम करने वाली सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया के नेतृत्व में काम करते हैं. वहीं मैसूर और सलबोनी के प्रेस भारतीय रिजर्व बैंक की सब्सिडियरी कंपनी भारतीय रिजर्व बैंक नोट मुद्रण प्राइवेट लिमिटेड के अधीन काम करते हैं.

वहीं इंडियन गॉवर्मेंट मिंट (मुंबई, कोलकाता, हैदराबाद, नोएडा) में सिक्के, सरकारी मेडल और अवार्ड आदि बनाए जाते हैं.

कहां से पेपर आता है– वैसे तो भारत की भी एक पेपर मिल सिक्योरिटी पेपर मिल (होशंगाबाद) है. ये नोट और स्टांप के लिए पेपर बनाती है. हालांकि भारत के नोट में लगने वाला अधिकतर पेपर जर्मनी, जापान और यूके से आयात किया जाता है. आरबीआई अधिकारियों के अनुसार 80 फीसदी नोट विदेशी कागज पर छपते हैं.

कहां से आती है स्याही– भारत के नोट में लगने वाली स्पेशल स्याही स्विजरलैंड की कंपनी SICPA से आयात की जाती है और यह कंपनी कई देशों को स्याही निर्यात करती है. इस मामले में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी स्वदेशी इंक और पेपर बनाने के लिए कहा था. कहा जाता है कि इसमें इंटैगलियो, फ्लूरोसेंस और ऑप्टिकल वेरिएबल इंक का इस्तेमाल होता है.

किस नोट की छपाई पर कितना खर्च– मीडिया रिपोर्ट के अनुसार आरटीआई में खुलासा हुआ था कि 5 रुपए के नोट में 50 पैसे, 10 रुपए के नोट में 0.96 पैसे, 50 के नोट में 1.81 रुपए और 100 के नोट में 1.79 रुपए की लागत आती है.

–आजतक से साभार

स्मृति शेष

प्रिंटट्रेड के स्वामी और प्रिंट एंड पब्लिसिंग के संपादक श्री एस. के. खुराना के दुखद निधन पर एसोसिएशन अपनी संवेदनाएं और श्रद्धांजलि अर्पित करती है। ईश्वर से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को यह असीम दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।

स्मृति शेष

डीपीए की सी.ए. फर्म एस. कुमार अग्रवाल एंड कंपनी के श्री एस. के. अग्रवाल के बड़े भाई श्री महेश कुमार गुप्ता के दुखद निधन पर एसोसिएशन अपनी संवेदनाएं और श्रद्धांजलि अर्पित करती है। ईश्वर से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को यह असीम दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।

स्मृति शेष

सरस्वती बुक बांइडिंग हाउस के श्री रोशन लाल शर्मा के पुत्र और डीपीए के उपाध्यक्ष श्री अजय शर्मा के कज़न श्री राकेश कुमार शर्मा के दुखद निधन पर एसोसिएशन अपनी संवेदनाएं और श्रद्धांजलि अर्पित करती है। ईश्वर से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को यह असीम दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।

स्मृति शेष

प्रिंटर्स रिपेयरिंग सेंटर के श्री सुनील पंचाल के बड़े भाई श्री ए. के. पंचाल के दुखद निधन पर एसोसिएशन अपनी संवेदनाएं और श्रद्धांजलि अर्पित करती है। ईश्वर से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को यह असीम दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।

स्मृति शेष

डीपीए के कार्य कारिणी के सदस्य और दीपक आर्ट प्रेस के स्वामी श्री पी. एन. कपूर के दुखद निधन पर एसोसिएशन अपनी संवेदनाएं और श्रद्धांजलि अर्पित करती है। ईश्वर से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को यह असीम दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।

NARSINGH & COMPANY
HO: 2241/36, 1st Floor, Kucha Challan, Daryaganj, New Delhi -110002
Phone: 011-23280705, 23269068
Mobile No: 9313515899, 9650453034, 7838671806, 9555707274
Email: narsinghgraphic@hotmail.com; sagar.screen147@gmail.com

SAGAR SCREEN
HO: 3601, Gali Hakim Bua wali, Shyam Bhawan, Netaji Subhash Marg, Daryaganj, New Delhi -110002
Phone: 011-23265826, 23269068
Mobile No: 7838671806, 9555707274, 9313515899, 9650453034,
Email: sagar.screen147@gmail.com

KHUSHI RAM & SONS
G-147 (Basement), Sector-63, Noida -201301 (U.P.)Phone: 0120-2406271 / 72
Mob: 9313515899, 7838671806, 8076993759
Email: khushiramsons148@gmail.com: narsinghgraphic@hotmail.com; sagar.screen147@gmail.com

BO: 1/11287A, Street No. 1, Subhash Park, Near Namkeen Chowk, Navin Shahdara, Delhi -32, Ph:9313515899, 7838671806, 9971685304

AUTHORIZED DEALER : Hubergroup India Pvt. Ltd., Siegwerk India Pvt. Ltd, Zenith Rubber Limited, Fujikura Rubber, Blankets, KRS Royal Green Blankets, Technova Inkjet Media, Technova Plates & Chemicals. **STOCKIST:** Damping Hose, Glass Balls, KRS Royal Green Blankets, Rubber Blankets (Fujikura, Cow & Valcon Reavees, Sawa, etc), Loyee, Graphic Art Films (Fuji)Tapes (Panfix, Comat, Classic) Arabic Gum & Machine Gum and other offset processing & Printing materials, STC Chemicals, Carbon Rod, Astolen Sheet, etc.

सर्दियों का सबसे बेहतर स्नैक है मखाना

सर्दियों के मौसम में भूख ज्यादा लगती है इसलिए खाना खाने के 2–3 घंटे बाद अक्सर आपको हल्की भूख का एहसास होता है। ऐसे समय में ज्यादातर लोग समोसा, पिज्जा, बर्गर जैसी चीजें खाकर अपनी सेहत खराब करते हैं। क्या आपको पता है कि सर्दियों में सबसे अच्छा स्नैक मखाना है? जी हां, मखाने को आप स्नैक के तौर पर खा सकते हैं। इससे आपके शरीर को ढेर सारे लाभ भी मिलते हैं और आपकी भूख भी शांत हो जाती है। इसलिए अगर आपको शाम के समय या सुबह हल्की भूख का एहसास होता है, तो आप एक कप चाय के साथ मखाना खा सकते हैं। आइए आपको बताते हैं क्या हैं इसके फायदे और किन तरीकों से आप मखाने को बना सकते हैं टेस्टी और मजेदार।

पौष्टिक होता है मखाना

मखाने में 9.7 प्रतिशत आसानी से पचने वाला प्रोटीन, 76 प्रतिशत कार्बोहाईड्रेट, 12.8 प्रतिशत नमी, 0.1 प्रतिशत हेल्दी फैट, 0.5 प्रतिशत सोडियम, 0.9 प्रतिशत फॉस्फोरस एवं 1.4 मिलीग्राम आयरन होता है। इसके साथ ही मखाने में कैल्शियम, अम्ल और विटामिन बी भी पाया जाता है। इसलिए मखाना बहुत पौष्टिक आहार माना जाता है।

क्या हैं मखाना खाने के फायदे

मखाने में फाइबर की मात्रा भरपूर होती है, साथ ही इसमें कैलोरी बहुत कम होती है इसलिए स्नैक के तौर पर ये सबसे अच्छा आहार है। मखाने का सेवन किडनी और दिल की सेहत के लिए फायदेमंद है। इससे आपकी शारीरिक कमजोरी दूर होती है और शरीर में तुरंत एनर्जी आती है। मखाना कैल्शियम से भरपूर होता है इसलिए हड्डियों के लिए बहुत फायदेमंद होता है।

मखाना एंटी–ऑक्सीडेंट से भरपूर होने के कारण त्वचा पर उम्र के प्रभाव को रोकता है और आपको लंबे समय तक जवां बनाता है। मखाना प्रीमेच्योर एजिंग, प्रीमेच्योर वाइट हेयर, झुर्रियों और एजिंग के अन्य लक्षणों के जोखिम को कम करने में मदद करता है। आइए आपको बताते हैं मखाना खाने का मजेदार तरीका।

रोस्टेड मखाना

शाम के स्नैक्स में मखाना खाने के लिए इसे एक पैन में थोड़ा सा ऑलिव ऑयल या देसी घी डालकर रोस्ट कर लें। घी में भूने हुए मखाने का स्वाद बेहतरीन होता है। इससे मखाने ज्यादा क्रंची और टेस्टी लगते हैं। रोस्ट करने के बाद इसमें नमक या चाट मसाला मिलाएं और खाएं। आप चाहें तो मखाने में काली मिर्च डालकर इसे और भी सेहतमंद बना सकते हैं।

–ओनली माई हैल्प से साभार

वैवाहिक वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएं

Wedding anniversary of Mr. Arun Bansal, Former President of DPA and Owner of Modern Printers on November 2,2018.

Wedding anniversary of Mr. Sanjay Sharma, Executive Committee member of DPA and owner of Balaji Offset on November 25, 2018

Wedding anniversary of Mr. Vijay Mohan, Former President of DPA and Owner of Shalimar Offset Press on November 27, 2018

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं

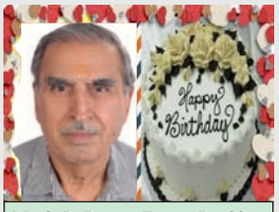

Mr. O. P. Dewan, Former President of DPA and Owner of Dewan Offset Printers on 1.11.2018

Mr. Rajiv Gupta, Former President of DPA and Owner of Press of India on 5.11.2018

Mr. Sandeep Aggarwal, Executive Committee Member of DPA and owner of Vishnu Offset Printers on 7.11.2018

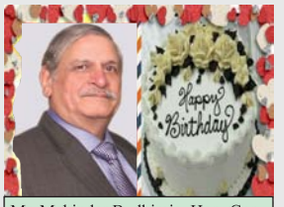

Mr. Mahinder Budhiraja, Hon. Gen. Secretary of DPA and owner of Emkay Printers on 16.11.2018

Mr. Satish Malhotra, Former President of AIFMP, and owner of Swan Press on 27.11.2018

ASC Avanti SALES CORPORATION
Authorised Dealers of: • TechNova • Siegwerk Inks • Huber Inks • Sakata Inks
Heidelberg CPC & Uflex Products
Head Office: L.G. 7,8,9, Usha Chamber, L.S.C. New Rajdhani Enclave, Vikas Marg, New Delhi-110092
Ph.: 22053788, 22534104, 42441020 • Mobiles: 9711817339, 9810046967
Email: ascppi@hotmail.com

प्रिंट मीडिया : भविष्य और संभावनाएं

खींचो न कमानों को, न तलवार निकालो।
जब तोप मुकाबिल हो, तो अखबार निकालो।।

प्रिंट मीडिया, मीडिया का एक महत्वपूर्ण भाग है जिसने इतिहास के सभी पहलुओं को दर्शाने में मदद की है। जर्मनी के गुटेनबर्ग में खुले पहले छापाखाना ने संचार के क्षेत्र में क्रांति ला दी। जब तक लोगों का परिचय इंटरनेट से नहीं हुआ था, तब तक प्रिंट मीडिया ही संचार का सर्वोत्तम माध्यम था। मैग्जीन, जर्नल, दैनिक अखबार को प्रिंट मीडिया के अंतर्गत रखा जाता है।

भारत समेत विश्वभर में क्रांतियों, आंदोलनों और अभियानों आदि में प्रिंट मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत में पहला अखबार 1780 में जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने 'बंगाल गजट' के नाम से प्रकाशित किया था। इसके बाद तो भारत में संचार के क्षेत्र में क्रांति–सी आ गई और एक के बाद एक कई अखबार प्रकाशित हुए। इंटरनेट के परिचय से पूर्व लोगों के लिए अखबार ही जानकारी के स्रोत थे। 1826 में हिन्दी का पहला अखबार 'उदंत मार्तंड' आया। आजादी से पूर्व जितने भी अखबारों का प्रकाशन शुरू हुआ, उन सभी में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आवाज उठाने की बात कही जाती थी। लोगों को ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों के बारे में बताया जाता था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अखबारों का पैटर्न बदला और अब अखबारों में सभी क्षेत्रों की खबरों को महत्व दिया जाने लगा। अखबार अब टू एजुकेट, टू इंटरटेन, टू इंफॉर्म के सिद्धांत पर चलने लगे।

रेडियो के बाद 15 सितंबर 1959 को दूरदर्शन के माध्यम से टीवी का आगमन हुआ। टीवी के आगामी दौर से अखबारों को किसी प्रकार का भय नहीं हुआ था लेकिन 90 के दशक में इंटरनेट के आने ने अखबारों को एक बार फिर सोचने पर मजबूर कर दिया। समय के साथ–साथ अखबारों ने भी अपने आप में बदलाव करना शुरू कर दिया। जो न्यूज हाथों से लिखी जाती थी, उनकी जगह कम्प्यूटर ने ले ली। जहां पहले सारा काम मैनुअल होता था, वहां अब बहुत से काम में उनकी जगह कम्प्यूटर ने ले ली, जैसे अखबार की डिजाइन बनाना, ले–आउट बनाना, फॉन्ट आदि।

टेक्नोलॉजी ने जिस गति से प्रगति की ठीक उसी प्रकार अखबारों ने भी उसे अपनाने में देर नहीं की। 21वीं शताब्दी में कोई भी व्यक्ति या संस्था बिना डिजिटल तकनीक के रह नहीं सकती है, यह बात अखबारों पर लागू होती है। कई अखबारों ने अपनी वेबसाइट बनाई, अखबारों को ई–पेपर के फॉर्मेट में उपलब्ध कराया। लेकिन इन सबके बावजूद आज भी 2017 में भी प्रिंट मीडिया की महत्ता बढ़ी ही हुई है। 2017 में अखबारों की विश्वसनीयता के पीछे सबसे बड़ा कारण है कि अखबारों ने टेक्नोलॉजी को अपना लिया। ऑडिट ब्यूरो ऑफ सर्कुलेशन (एबीसी) ने 10 साल (2006–2016) तक की गणना करके आंकड़े जारी किए। आंकड़ों के अनुसार प्रिंट मीडिया का सर्कुलेशन 2006 में 3.91 करोड़ प्रतियां था, जो 2016 में बढ़कर 6.28 करोड़ प्रतियां हो गया यानी 2.37 करोड़ प्रतियां बढ़ीं। प्रिंट मीडिया के सर्कुलेशन की दर 37 प्रतिशत थी और लगभग 5,000 करोड़ का निवेश हुआ। अखबारों में सबसे ज्यादा वृद्धि उत्तरी क्षेत्र में 7.83 प्रतिशत के साथ देखने को मिली वहीं सबसे कम वृद्धि पूर्वी क्षेत्रों में 2.63 प्रतिशत के साथ देखने को मिली। सभी भाषाओं के अखबारों में हिन्दी भाषा में सर्वाधिक वृद्धि हुई। आंकड़ों को देखने के बाद यह कोई भी नहीं कह सकता कि अखबारों का पतन हो रहा है। इलेक्ट्रॉनिक, वेब, सोशल, पैरालल आदि मीडिया उपलब्ध होने के बाद भी प्रिंट मीडिया के इतना पॉपुलर होने के पीछे कई कारण हैं जिनमें लोगों का शिक्षित होना सबसे बड़ा कारण है। जहां विकसित देशों में अखबारों के प्रति लोगों का रुझान घट रहा है वहीं भारत में इसके विपरीत प्रिंट मीडिया का प्रसार बढ़ रहा है।

2011 की जनगणना के अनुसार पता चलता है कि भारत में साक्षरता दर बढ़ी है 2001 की तुलना में। भारत में लोग शिक्षित हो रहे हैं, साथ ही साथ उनमें पढ़ने और जानने की उत्सुकता बढ़ रही है जिसके कारण भारत में प्रिंट मीडिया का प्रसार बढ़ रहा है।

आज भी लोग किसी भी खबर की सत्यता को जानने, विस्तृत जानकारी प्राप्त करने और जागरूकता बढ़ाने में अखबार का सहारा लेते हैं। प्रिंट मीडिया भले ही बहुत ही धीमा माध्यम हो, परंतु यह आज के कम्प्यूटर के युग में यह प्रगति कर रहा है। इन सब बातों के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रिंट मीडिया का भविष्य उज्ज्वल है।

–विनय कुशवाहा

MAGIC ROLLS COMPANY
A name for excellence
Printing Rubber Rollers
Combo UV/Rollers/Rilsan Rider/PU Rider
Contact: Amandeep Singh
Mobile: 9810177933, 9818059995
E-mail: magicrolls@gmail.com
Website: www.magicrollcompany.com

Labelexpo India 2018 Reports Highest Ever Visitor Number

The organizer of Labelexpo India is pleased to report its 6th edition of Labelexpo India, which took place at India Expo Centre & Mart in Greater Noida from 22 to 25 November 2018, was its largest show to date in the region. A total of 9,851 visitors from 55 countries passed through its doors over the four days of the show, 22.7 percent more than in its last edition in 2016 and the biggest visitor increase to date.

Lisa Milburn, managing director for Labelexpo Global Series, said: "We are absolutely delighted with the overwhelming success of this year's Labelexpo India. The fantastic visitor number surpassed all our expectations, and the sheer volume of sales achieved over the four days showed how valuable the show has been for generating new business. It is also resounding proof that the Indian label and package printing market is booming, with printer demand for new technology and innovation moving at an incredible rate. It also means that this show – the only dedicated event of its kind for the labels and package printing industry in the region – is more important than ever."

The show was also 28 percent larger in size, with 250 exhibitors occupying a total floorspace of 7,073 sqm compared to 200 across 5,899 sqm in the 2016 edition. This makes the 2018 edition the biggest Labelexpo show in the region to date.

The show was a catalyst for machinery launches and numerous sales achieved by many of the 250 exhibitors on the show floor to Indian converters, including Indian company Monotech Systems, who launched and sold two Jetsci Colornovo UV inkjet presses, and made a further eight sales at the show; Multitec, who announced the sale of two 8-colour presses; HP Indigo, who sold its 6900 press, and Vinsak, who sold two of their USAR slitter rewinders in addition to two Synchroline presses on behalf of Italian manufacturer Lombardi on day one of the show. They also announced a further four orders placed at the show floor. Other machinery sales were achieved by Nilpeter, Omet, Xeikon, Rhyguan, Brotech, UV Graphic, SNM Enterprises, Hyden Packaging, Marks Print, amongst others. Other launches included IEEC's Ozonash and Lab Corona Treater; and Alliance Printech's Alliance A3 flexo press. Veepee Graphics, a pre-press trade house, launched a mobile application for its customers.

Complementing the Expo, an extremely well attended Brand Innovation Day took place on day one of the show. Brand owners and designers from a wide range of sectors took part in an exclusive series of seminars and educational sessions aimed at equipping them with expert insight into making the most out of their brand, how they can overcome key challenges on the path to future growth, and stay ahead of the competition in a fast-paced industry. Speakers included the World Packaging Organisation, General Mills and Twinings, with attendees from companies including Reckitt Benckiser, Landor, Bosch and Adobe. In addition, Andy Thomas-Emans, strategic director for Labelexpo Global Series, moderated a lively panel discussion on product decoration, joined by representatives from SMI Coated Products, Esko, HP India and Avery Dennison.

Milburn continued: "The success of our Brand Innovation Day, coupled with our series of exceptionally popular forum events for converters around India, Sri Lanka and Bangladesh in the run-up to the show, also helped contribute to this show's achievement by building fantastic momentum. We saw a large delegation from Bangladesh attending Labelexpo India for the first time, which is hugely encouraging. We are also grateful to the unwavering support from key trade associations in the region including LMAI, AIFMP, DPA, ASPA, SLAP and FNPA. We very much look forward to building on this success for our next Labelexpo India in 2020."

DPA Stall at Labelexpo India-2018

Tarsus Group of the UK had organised Labelexpo India at India Expo Mart in Greater Noida from 22nd to 25th November 2018. The 4-day international exhibition of the latest technologies in the fastest growing sector of the print had over 250 exhibitors who showcased their state-of-the-art presses giving live demonstrations.

As in the case of earlier editions of Labelexpo India, the organisers had signed a barter agreement with Delhi Printers' Association under which DPA had given its support to their show and in return they had allotted a complimentary stall to the association. At the stall DPA had displayed through panels its 64-year old history of the major events it organised from time to time for the benefit and growth of the printing industry. The association's monthly newsletter *Masik Samachar Patrika* and bi-monthly *Delhi Printer* as well as the directory of its members were also kept for sale. A number of visitors showed keen interest in the colourful events of DPA which is the largest association of printers in Asia.

FALCON VACUUM PUMPS

Visit us at:

PRINTPACK INDIA 2019

from 1st-6th Feb 2019 India Expo Centre, Gr. Noida, NCR Delhi

Stall No. C34/5 Hall No.

D LV 1000 C DV
For Komori Offset

D LV 1000 C DVVL
For Heidelberg Double Color

Manufactured, Sold & Serviced by :

FALCON VACUUM PUMPS & SYSTEMS

98, Ram Saroop Industrial Complex,
Mujessar, Faridabad - 121 005, (Hr.) INDIA
Phone : +91-129-4022837, 4026023
Fax : +91-129-4022837
E-mail : info@falconpumps.com
Website: www.falconpumps.com

mediaexpo

MUMBAI

21 – 23 February 2019

Bombay Exhibition Center, Mumbai

PRE-REGISTER ONLINE!

150+
Exhibiting companies

500+
Product categories

7,000+
Sqms Exhibition space

Seminars
Workshops & more...

Save time.

Visit **www.mediaexpo-mumbai.com** to get your badge.

For queries, contact:
+91 22 6144 5962

messe frankfurt